गुरु नानक – सबद १६

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ३

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥
मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥
मंनै मगु न चलै पंथु ॥
मंनै धरम सेती सनबंधु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥

सार: हदों और चुनौतियों से रुके बिना उन्हें अपनाना, स्वीकृति है। यह हमें चुनौतियों से ऊपर उठने और इनसे जीतने की शक्ति देती है, ताकि हम इनकी असलियत को स्वीकार कर सकें।

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥
जो स्वीकृति को अपनाते हैं वह अपनी जीवन यात्रा के दौरान में आयी मुश्किलों पर विजय प्राप्त करते हैं।

मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥
स्वीकृति को अपनाते हैं वह अंततः अपनी सक्षमता दर्शाते हैं।

मंनै मगु न चलै पंथु ॥
जो स्वीकृति को अपनाते हैं वह किसी विशेष धार्मिक मार्ग का अनुसरण नहीं करते हैं।

मंनै धरम सेती सनबंधु ॥
जो स्वीकृति को अपनाते हैं वह केवल नेकी से जुड़ते हैं।

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
ऐसे प्राणियों का अस्तित्व पवित्र है।

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥
जो स्वीकृति का अभ्यास करते हैं वह अपनी स्थिति से अवगत रहते हैं। (१४)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि पूर्ण स्वीकृति रस्मी रिवायत, परंपराओं को रद्द करने और दुनयावी भलाई के लिए अस्वीकृत सामाजिक मानदंडों को स्वीकार करने की एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: **onenessindiversityfoundation@gmail.com**